06 MAY 2024 M4U:Layout 1 06-May-24 12:53 AM Page 1

दैनिक

जनता की आवाज

मीडिया फॉर यू

प्रकाशन के 09 वर्ष

RNI: UPHIN/2015/65169

सोमवार 06 मई 2024

वर्ष: 09, अंक: 102

पृष्ठ: 04 मूल्य: 02 रुपया

गाजियाबाद से प्रकाशित हापुड़ ❖ मेरठ ❖ शामली ❖ मुजफ्फरनगर ❖ बागपत ❖ सहारनपुर ❖ बिजनौर ❖ दिल्ली एनसीआर में प्रसारित

Email:- m4unews@gmail.com 8445657566

नशीले पाउडर के साथ एक... 4

सपा-कांग्रेस अपने बच्चों के लिए लड़ रहे तो मोदी-योगी आपके बच्चों के भविष्य के लिए खप रहे: पीएम मोदी

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इटावा में आयोजित जनसभा में इटावा, मैनपुरी और कन्नौज के प्रत्याशियों के लिए मांगा समर्थन
- पीएम ने सपा और कांग्रेस पर साधा निशाना, कहा - परिवारवादियों की विरासत गाड़ी, बंगला और राजनीतिक रसूख
- मोदी की विरासत गरीब का पक्का घर, शौचालय, बिजली, गैस, नल, मुफ्त राशन, मुफ्त इलाज और नई शिक्षा नीति
- पीएम की मतदाताओं से अपील, आप सांसद नहीं भारत की सरकार चुनेंगे, आपका एक वोट मोदी को सशक्त बनाएगा

इटावा एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को इटावा में आयोजित जनसभा के माध्यम से एक साथ तीन लोकसभा क्षेत्रों (इटावा, मैनपुरी और कन्नौज) के मतदाताओं को संबोधित किया और भाजपा प्रत्याशियों के समर्थन में मतदान की अपील की। इस दौरान पीएम मोदी के निशाने पर सपा और कांग्रेस गठबंधन रहा। उन्होंने कहा कि मोदी अपने 10 साल के कार्यकाल के बाद फिर एक बार आपसे आशीर्वाद मांगने आया है। आप सबने मेरी मेहनत देखी है, ईमानदारी से आप लोगों की सेवा करना, ये मेरा धर्म रहा है। अब मोदी भारत के लिए आने वाले 5 साल ही नहीं 25 साल का रास्ता बना रहा है। भारत एक हजार साल के लिए सशक्त हो, मोदी उसकी नींव तैयार कर रहा है। मोदी ये सब क्यों कर रहा है, क्योंकि मोदी रहे या न रहे देश हमेशा रहेगा। दूसरी तरफ ये सपा और कांग्रेस वाले क्या कर रहे हैं, ये चुनाव लड़ रहे हैं अपने भविष्य के लिए, अपने बच्चों के भविष्य के लिए। वहीं मोदी-योगी खप रहे हैं आपके बच्चों के लिए, आपके बच्चों का भविष्य बनाने के लिए। पीएम मोदी ने कहा कि मैनपुरी से जयवीर सिंह, इटावा से रामशंकर कठेरिया और कन्नौज से सुब्रत पाठक को चुनेंगे तो मोदी सशक्त होगा। आप सिर्फ सांसद नहीं चुनेंगे, आप भारत की सरकार चुनेंगे। उन्होने कार्यकताओं से अपील की कि आप घर-घर जाइएगा और ज्यादा से ज्यादा मतदान के लिए लोगों को प्रेरित कीजिएगा। साथ ही उनसे कहिएगा कि मोदी जी ने आपको जय श्री राम कहा है।

पीएम मोदी ने कहा कि इन परिवारवादियों की विरासत गाड़ी, बंगला, राजनीतिक रसूख है। कोई मैनपुरी,

कन्नौज, इटावा को अपनी जागीर मानता है, कोई अमेठी रायबरेली को अपनी जागीर मानता है। लेकिन मोदी की विरासत गरीब का पक्का घर है, मोदी की विरासत देश की करोड़ो माताओं-बहनों को मिला शौचालय है, मोदी की विरासत दलित गरीबों को मिली बिजली, गैस, नल की सुविधा है। मोदी की विरासत गरीबों को मिला मुफ्त राशन है, मुफ्त इलाज है, मोदी की विरासत आपके बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए बनाई गई नई शिक्षा नीति है, मोदी की विरासत तो सबकी है, सबके लिए है। कौन जानता है कि 2047 में आपका ही बेटा, बेटी प्रधानंत्री बने, मुख्यमंत्री बने। शाही परिवार का वारिस ही पीएम और सीएम बनेगा, ये कुप्रथा इस चायवाले ने तोड़ दी है। सपा और कांग्रेस के वादों को झूठा बताते हुए पीएम मोदी ने कहा कि इनकी बातें झूठी, वादे भी झूठे हैं। सपा कांग्रेस के नारे झूठे, और नीयत में भी खोट है। इन लोगों ने कोरोना संकट काल में भी लोगों को नहीं बख्शा था। देश के वैज्ञानिकों ने टीका बनाया, लेकिन सपा कांग्रेस के लोग उसको भी बदनाम करते थे। खुद चोरी छुपे टीके लगवाते थे और टीवी पर सोशल मीडिया पर लोगों को भड़काते थे, ताकि हाहाकार फैले और मोदी पर कलंक लगे। अब ये हमारा लोकतंत्र हमारे संविधान को लेकर झूठ फैलाने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगा रहे हैं।

संक्षिप्त समाचार

बीएसएफ के जवान ने अज्ञात कारणों के चलते बीएसएफ चौकी परिसर में फाँसी लगाकर की आत्महत्या

जैसलमेर एजेंसी। भारत-पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय सीमा पर तैनात सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के एक जवान ने रविवार को कथित तौर फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि अंतरराष्ट्रीय सीमा पर बबलीयानवाला चौकी पर तैनात मुकंदा डेका (57) ने बीएसएफ चौकी परिसर में एक पेड़ से फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। पुलिस के मुताबिक, आत्महत्या का कारण अभी पता नहीं चल पाया है और जांच के बाद वास्तविक कारणों का खुलासा हो सकेगा। पुलिस ने बताया कि जब अन्य जवान बीएसएफ चौकी परिसर में निकले तो उन्होंने डेका को एक पेड़ से लटका हुआ देखा। पुलिस ने बताया कि कि बबलीयानवाला चौकी जैसलमेर से लगभग 140 किमी दूर स्थित है। पुलिस के मुताबिक, मृतक जवान असम का रहने वाला था और बीएसएफ में कांस्टेबल के रूप में बबलीयानवाला चौकी पर तैनात था। बीएसएफ अधिकारियों द्वारा पुलिस को सूचना दिए जाने के बाद तनोट थाने से एक टीम मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर रामगढ अस्पताल के मुर्दा घर में रखवाया। पुलिस ने बताया कि मृत जवान के परिवार के सदस्यों को सूचित कर दिया गया है और परिजनों के यहां पहुंचने पर पोस्टमार्टम करवाया जायेगा। पुलिस के मुताबिक, वह हाल में छुट्टी से लौटे थे।

सपा ने आतंकवादियों के खिलाफ मुकदमे वापस लेने की कोशिश की, राम का अपमान किया: योगी

हरदोई एजेंसी। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को आरोप लगाया कि समाजवादी पार्टी (सपा) अपने शासनकाल में आतंकवादियों के मुकदमों को वापस लेने में रुचि लेती थी और उसने भगवान राम का अपमान किया। आदित्यनाथ ने मिश्रिख से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सांसद व प्रत्याशी अशोक रावत के समर्थन में मल्लावां, हरदोई में आयोजित जनसभा को संबोधित करते हुए आरोप लगाया कि इन लोगों (सपा) ने अयोध्या, रामपुर में सीआरपीएफ कैंप, काशी में संकटमोचन मंदिर, लखनऊ, अयोध्या और वाराणसी की कचहरी पर हमला करने वाले आतंकियों के मुकदमों को वापस लेने का प्रयास किया था।

मुख्यमंत्री के मुताबिक, तब उच्च न्यायालय ने कहा था कि आज आतंकियों के मुकदमे वापस ले रहे हो, कल इन्हें पद्म पुरस्कार से नवाजोगे। उन्होंने कहा कि दो चरणों के चुनाव ने साबित कर दिया कि अबकी बार-400 पार का लक्ष्य प्राप्त होगा और इसमें सबसे बड़ा योगदान उत्तर प्रदेश का होगा। आदित्यनाथ ने सिलसिलेवार उपलब्धियां बताते हुए कहा, नए भारत में नई विकास यात्रा चल रही है। 1947 तक जितने राजमार्ग बने, मोदी जी के नेतृत्व में उससे दोगुने राजमार्ग 10 वर्ष में बन गए हैं। दोगुने हवाई अड्डे बन गए हैं। कांग्रेस ने सिर्फ एक एम्स बनाया, छह एम्स अटल जी और 15 एम्स मोदी जी ने बनवाए। मुख्यमंत्री ने गरीबों के कल्याण के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता के प्रमाण के रूप में 80 करोड़ लोगों को मुफ्त राशन के प्रावधान का हवाला दिया। उन्होंने दावा किया कि घरों और शौचालयों के निर्माण के मामले में हरदोई और सीतापुर ने बहुत प्रगति की है। योगी ने कहा कि डबल इंजन सरकार में अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण हो चुका है।

जलेसर में रैली के दौरान अखिलेश यादव ने केंद्र पर साधा निशाना

बीजेपी की झूठी सरकार को जनता के सच्चे सवालों का सामना करना होगा

आगरा एजेंसी। समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने रविवार को कहा इस लोकसभा चुनाव में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की झूठी सरकार को जनता के सच्चे सवालों का सामना करना पड़ेगा। सपा अध्यक्ष ने आगरा लोकसभा क्षेत्र के जलेसर में आयोजित एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए भाजपा की कड़ी आलोचना की। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर निशाना साधते हुए कहा, 'जो लोग मन की बात करते थे, हम उनसे कहेंगे कि अब संविधान की बात हो। अब मनमर्जी नहीं चलेगी। अब भाजपा की झूठी सरकार को जनता के सच्चे सवालों का सामना करना पड़ेगा।'

उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा, 'भाजपा के लिए जनता का सच्चा सवाल है कि उसने अपने नेताओं से बार-बार बाबा साहब भीमराव आंबेडकर जी का दिया हुआ संविधान बदलने की बात क्यों कहलाई? क्या भाजपा के पास इसका जवाब है? भाजपा ने शोषितों, वंचितों और पीड़ितों की रक्षा करने वाले संविधान को बदलने की तथा संविधान द्वारा दिए गए आरक्षण को खत्म करने की बात क्यों उठाई। ये जनता के सच्चे सवाल हैं जिनका भाजपा के पास कोई जवाब नहीं है।' उन्होंने कहा, 'भाजपा ने सरकारी नौकरी न निकाल करके आरक्षण से मिलने वाली नौकरियां देने से क्यों रोका? भाजपा ने पेपर लीक करवाकर किसी भी भर्ती को क्यों पूरा नहीं होने दिया? भाजपा ने सेना की पक्की नौकरी को चार साल की कच्ची नौकरी में क्यों बदलने दिया? ये तमाम वह सच्चे सवाल हैं जो हम जनता की तरफ से पूछ रहे हैं। इन सवालों का भाजपा के पास एक भी जवाब नहीं है। अगर उनके पास एक भी जवाब नहीं है तो आप उन्हें एक भी वोट नहीं देना।' यादव ने दावा किया, 'पहले और दूसरे चरण के बाद तीसरे चरण में पीडीए परिवार यानी पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक, आदिवासी और आधी आबादी सब मिलकर इस बार भाजपा की सरकार को पलटने जा रहे हैं।' उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा ने चुनावी बॉण्ड के नाम

पर बड़े-बड़े उद्योगपतियों से पैसा वसूल लिया और इतना पैसा वसूला जिससे आज सभी को महंगाई का सामना करना पड़ रहा है। पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि भाजपा के लोग यह सच्चाई नहीं बता पाते हैं कि इन्हीं चुनावी बॉण्ड की वजह से महंगाई है। उन्होंने कोविशील्ड टीके के दुष्प्रभाव को लेकर हुए कथित खुलासे की तरफ इशारा करते हुए कहा, भाजपा के लोग संविधान के पीछे तो पड़े ही हैं, हमारी आपकी जान के पीछे भी पड़े हैं। वैक्सीन का खेल खुल गया है और आप जब वैक्सीन लगवाने का सर्टिफिकेट देखते होंगे तो बताइए घबराहट होती है कि नहीं? यादव ने कहा, 'हम तो बच गए लेकिन कुछ लोगों को जबरदस्ती वैक्सीन (कोविड रोधी टीका) लगा दिया गया। अब तो वह रिपोर्ट आ गई है कि इससे दिल और उससे संबंधित बीमारियां हो सकती हैं। तो बताओ भाजपा ने जान का खतरा पैदा किया कि नहीं। इतना ही नहीं भाजपा ने वैक्सीन लगाने वाली कंपनियों से भी पैसा वसूल लिया।' उन्होंने कहा, 'भाजपा बाबा साहब भीमराव अंबेडकर का दिया हुआ संविधान बदलना चाहती है लेकिन हम भाजपा के लोगों को बताना चाहते हैं कि जो लोग संविधान बदलने निकलेंगे उन्हें यह जनता बदल देगी।' यादव ने भाजपा पर किसानों को दुख देने का आरोप लगाते हुए कहा कि जिस तरह से महंगाई बढ़ी है उससे तो यह लगता है कि भाजपा की सरकार में किसान बर्बाद हो जाएंगे और मजबूर होकर अपनी खेती बाड़ी छोड़ मजदूर बन जाएंगे।

(मीडिया फॉर यू की खबर का असर)

बिरदा ,बनियाभारी, लालनगर, किलौली, बाघाजोत व मोहनजोत की सड़क बनाकर तैयार

मीडिया फॉर यू ब्यूरो

मसीउद्दीन खान मस्सू,

उतरौला बलरामपुर: मोहनजोत, और किलौली, बाघाजोत, बिरदा, बनियाभारी, व लालनगर, जाने वाली खराब सड़क की खबर मीडिया फॉर यू अखबार ने प्रमुखता से प्रकाशित की थी। इस खबर का असर हुआ। और बहुत दिनों से टूटी इस खराब सड़क को बनाकर तैयार कर दिया गया। सड़क को बनाए जाने से इन सब गांव के लोगों में

काफी खुशी का माहौल है। इस क्षेत्र की जनता ने मीडिया फॉर यू अखबार को इस खराब सड़क की खबर प्रकाशित करने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

सिर्फ अपने बच्चों के भविष्य के लिए चुनाव लड़ रहे हैं समाजवादी पार्टी और कांग्रेस: मोदी

इटावा एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने समाजवादी पार्टी (सपा) और कांग्रेस पर सिर्फ अपने और अपने बच्चों के भविष्य के लिए चुनाव लड़ने का आरोप लगाते हुए रविवार को कहा कि शाही परिवार का वारिस ही प्रधानमंत्री या मुख्यमंत्री बनेगा, यह कुप्रथा चाय वाले ने तोड़ दी है। प्रधानमंत्री ने सपा के गढ़ माने जाने वाले इटावा में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए कहा, मोदी भारत के लिए आने वाले पांच साल ही नहीं बल्कि 25 सालों का रास्ता बना रहा है। मोदी यह सब क्यों कर रहा है क्योंकि मोदी रहे ना रहे देश हमेशा रहेगा।

उन्होंने कहा, यह सपा-कांग्रेस वाले क्या कर रहे हैं? यह अपने भविष्य के लिए, अपने बच्चों के भविष्य के लिए चुनाव लड़ रहे हैं। मोदी ने सपा और कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा, इन परिवारवादियों की विरासत क्या है.... गाड़ी, बंगला, राजनीतिक रसूख। कोई मैनपुरी, कन्नौज और इटावा को अपनी जागीर मानता है तो कोई अमेठी और रायबरेली को अपनी जागीर मानता है। उन्होंने कहा, लेकिन मोदी की विरासत गरीब

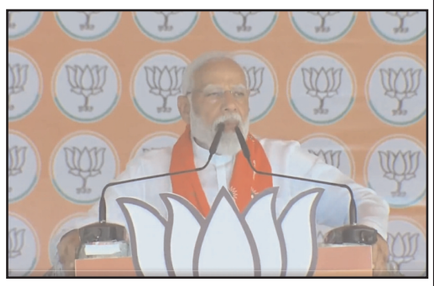

का पक्का घर है, देश की करोड़ों माताओं-बहनों को मिला शौचालय है और दलितों-पिछड़ों को मिली बिजली, गैस और नल (से पानी) जैसी सुविधा है। प्रधानमंत्री ने कहा, मोदी की बनाई गई विरासत सबके लिए है। हम चाहते हैं कि 2047 में आपका ही बेटा-बेटी प्रधानमंत्री बने, मुख्यमंत्री बने। शाही परिवार का वारिस ही प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री बनेगा यह कुप्रथा इस चाय वाले ने तोड़ दी है।

रायबरेली और अमेठी में चुनाव प्रचार का नेतृत्व करेगीं प्रियंका गाँधी

नई दिल्ली एजेंसी। कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी वाद्रा रायबरेली और अमेठी में लोकसभा चुनाव प्रचार का नेतृत्व करेंगी तथा दोनों सीट पर पार्टी की जीत सुनिश्चित करने के लिए सोमवार से उत्तर प्रदेश के इन संसदीय क्षेत्रों में डेरा डालेंगी। सूत्रों ने यह जानकारी दी। कई दिनों से जारी असमंजस को खत्म करते हुए कांग्रेस ने शुक्रवार को घोषणा की कि राहुल गांधी रायबरेली से लोकसभा चुनाव लड़ेंगे, जो पिछले दो दशकों से उनकी मां सोनिया गांधी का निर्वाचन क्षेत्र रहा है। वहीं, गांधी परिवार के करीबी सहयोगी किशोरी लाल शर्मा अमेठी से चुनाव लड़ेंगे।

प्रियंका गांधी ने पहले ही प्रचार अभियान की कमान संभाल ली है और सोमवार से चुनाव खत्म होने तक वह रायबरेली तथा अमेठी में डेरा डाले रहेंगी। सूत्रों ने बताया कि प्रियंका अपने भाई राहुल गांधी और शर्मा की जीत सुनिश्चित करने के लिए आक्रामक तरीके से प्रचार करेंगी। राहुल गांधी के पूरे भारत में प्रचार करने के साथ, प्रियंका गांधी ने परिवार के दोनों गढ़ में प्रचार अभियान की कमान संभालने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने रायबरेली से बड़े अंतर से जीत सुनिश्चित करने और अमेठी में फिर से पार्टी को विजय दिलाने का संकल्प लिया है। अमेठी में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की नेता स्मृति ईरानी ने 2019 के लोकसभा चुनाव में राहुल गांधी को हराया था। इस संबंध में एक सूत्र ने कहा, वह (प्रियंका गांधी) अमेठी और रायबरेली में प्रचार अभियान की अगुवाई करेंगी। वह दोनों निर्वाचन क्षेत्रों में चुनाव होने तक वहीं रहेंगी। सूत्रों ने कहा कि प्रियंका गांधी सैकड़ों नुक्कड़ सभाएं, बैठकें करने के साथ घर-घर जाकर प्रचार करेंगी। उन्होंने कहा, केंद्र रायबरेली होगा, जहां वह एक अतिथि गृह में ठहरेंगी। बूथ प्रबंधन से लेकर संपर्क तक, सबकुछ वही संभालेंगी।

सूत्रों ने कहा कि स्वतंत्रता सेनानियों के परिवारों और दशकों से गांधी परिवार के साथ पारिवारिक संबंध रखने वाले लोगों तक पहुंचने की कवायद शुरू हो चुकी है। उन्होंने कहा कि प्रियंका दोनों निर्वाचन क्षेत्रों में डिजिटल और सोशल मीडिया प्रचार अभियान की भी निगरानी करेंगी। सूत्रों ने कहा कि दोनों निर्वाचन क्षेत्रों में लोगों तक पहुंचने के लिए संगठन के विभिन्न स्तरों पर प्रचार अभियान चलाया जाएगा। प्रियंका गांधी कांग्रेस प्रमुख मल्लिकार्जुन खरगे, छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और राजस्थान के पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट जैसे शीर्ष नेताओं के प्रचार अभियानों की योजना और कार्यक्रम का भी ध्यान रखेंगी। सूत्रों ने कहा कि वह लगभग 250-300 गांवों को कवर करेंगी और दोनों निर्वाचन क्षेत्रों को बराबर समय देंगी। फिरोज गांधी ने रायबरेली में जो मजबूत नींव रखी, उसे बाद में उनकी पत्नी और पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने और मजबूत किया। इंदिरा गांधी ने 1967, 1971 और 1980 में इस सीट से जीत दर्ज की। उनके बाद गांधी परिवार के दोस्तों और सदस्यों ने इस सीट पर पार्टी का परचम लहराया। ईरानी ने 2019 में अमेठी में राहुल गांधी को 55,000 से अधिक वोट से हराया था, जबकि रायबरेली में सोनिया गांधी ने भाजपा के दिनेश प्रताप सिंह को 1,67,000 से अधिक वोट से हराया था।

आतंकियों की तलाश जारी, पूछताछ के लिए कई लोगों को हिरासत में लिया गया

पुंछ एजेंसी। जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में भारतीय वायुसेना (आईएएफ) के काफिले पर हमले में शामिल आतंकवादियों का पता लगाने के लिए व्यापक तलाशी अभियान रविवार को दूसरे दिन भी जारी रहा और कई लोगों को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया गया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। जम्मू के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक आनंद जैन और सेना तथा खुफिया एजेंसियों के वरिष्ठ अधिकारियों ने सुरनकोट क्षेत्र में हमला स्थल का दौरा किया। उन्होंने बताया कि सेना ने एक हेलीकॉप्टर के जरिये हवाई निगरानी भी की। शाहसितार के पास शनिवार शाम हुए हमले में वायुसेना के पांच कर्मी घायल हो गए और उनमें से एक ने बाद में एक सैन्य अस्पताल में दम तोड़ दिया।

अधिकारियों ने कहा कि आतंकवादियों का सफाया करने के लिए शाहसितार, गुरसाई, सनाई और शीनदारा टॉप समेत कई इलाकों में सेना व पुलिस का संयुक्त अभियान जारी है। उन्होंने बताया कि माना जा रहा है कि हमले के बाद हमलावर जंगल में भाग गए। अधिकारियों ने बताया कि आतंकवादियों ने अधिकाधिक लोगों को हताहत करने के लिए एके असॉल्ट राइफलों के अलावा अमेरिका में निर्मित एम4 कार्बाइन और स्टील की गोलियों का भी इस्तेमाल किया। वायुसेना ने शहीद नायक की पहचान कॉरपोरल विक्की पहाड़े के रूप में की है और उनके परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त की है। वायुसेना ने कहा, वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल वी. आर. चौधरी और भारतीय वायुसेना के सभी कर्मी वीर कॉरपोरल विक्की पहाड़े को नमन करते हैं, जिन्होंने पुंछ सेक्टर में राष्ट्र की सेवा में सर्वोच्च बलिदान दिया। शोक संतप्त परिवार के प्रति हम गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं। दुख की इस घड़ी में हम आपके साथ मजबूती से खड़े हैं। अधिकारियों ने कहा कि सेना के पैरा कमांडो की अलग-अलग टीम को भी तलाशी अभियान में लगाया गया है। उन्होंने कहा कि आतंकवादियों के ठिकाने के बारे में अभी कुछ पता नहीं चला है। अधिकारियों ने कहा कि हमले के संबंध में पूछताछ के लिए कई लोगों को हिरासत में लिया गया है। यह इस साल जम्मू क्षेत्र में पहली बड़ी आतंकवादी घटना है। सीमावर्ती पुंछ जिले के साथ-साथ निकटवर्ती राजौरी में पिछले दो वर्ष में बड़े आतंकवादी हमले हुए हैं। वर्ष 2003 और 2021 के बीच यह क्षेत्र शांतिपूर्ण रहा था।

06 MAY 2024 M4U:Layout 1 06-May-24 12:53 AM Page 2

सम्पादकीय

लोकतंत्र पर दाग

एक समय था कि जब लोग देश के नेताओं के सार्वजनिक जीवन में आचरण का अनुसरण करते थे। नेताओं को भी समाज में अपनी छवि व प्रतिष्ठा की फिक्र रहती थी। वे कहे को जीते भी थे। लेकिन हाल के वर्षों में राजनीति में कई क्षत्रप परिवारों के ऐसा नेता भी सामने आए हैं जिन्होंने सत्तामद में चूर होकर तमाम नैतिकताओं व मयार्दाओं को ताक पर रखा। पिछले दिनों कर्नाटक में हासन सीट से जनता दल (सेक्यूलर) के सांसद प्रज्वल रेवन्ना पर सैकड़ों महिलाओं के साथ दुराचार के जो गंभीर आरोप लगे, उसने राजनीति में पतन की पराकाष्ठा को दशार्या है। आरोपी सांसद का दुस्साहस देखिए कि वह मतदान के दिन तक चुनाव क्षेत्र में रहा और फिर जर्मनी भाग गया। पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवगौड़ा के पौत्र और पूर्वमंत्री एचडी रेवन्ना के पुत्र प्रज्वल के यौन उत्पीड़न व दुराचार दशार्ते करीब तीन हजार वीडियो सार्वजनिक हुए। चुनाव प्रचार के दौरान वीडियो पेन ड्राइव के जरिये बांटे जाते रहे। निस्संदेह इस मामले के खुलासे की टाइमिंग के राजनीतिक निहितार्थ हैं। वहीं भाजपा के एक नेता ने एक साल पहले भाजपा नेतृत्व को पत्र लिखकर चेताया था कि प्रज्वल के कुकृत्यों की पेन ड्राइव कांग्रेस के पास पहुंच चुकी है। जिसका उपयोग लोकसभा चुनाव में हथियार के रूप में किया जाएगा। सवाल भाजपा नेतृत्व पर भी है कि हकीकत से वाकिफ होने के बावजूद क्यों प्रज्वल रेवन्ना को गठबंधन के सहयोगी कोटे से टिकट दिया गया? जब राज्य में कांग्रेस की सरकार है तो एक साल पहले जानकारी होने के बावजूद प्रज्वल रेवन्ना के खिलाफ कार्रवाई क्यों नहीं की गई? दरअसल, एक समुदाय विशेष में एचडी देवगौड़ा परिवार की पकड़ होने की वजह से भाजपा व कांग्रेस कड़ी कार्रवाई से बचते रहे हैं। बहरहाल, इस सेक्स स्कैंडल के उजागर होने और उसके बाद तमाम सफाई के बावजूद जनता दल सेक्यूलर और उसकी सहयोगी भाजपा को राहत मिलना मुश्किल है। वजह है कि आरोप गंभीर और महिलाओं की अस्मिता से जुड़े हैं।निश्चित रूप से कर्नाटक में पूर्व प्रधानमंत्री के परिवार के सदस्य व सांसद ने जो कुकृत्य किये हैं, उससे भारतीय लोकतंत्र शर्मसार हुआ है। विडंबना देखिये कि जो बड़े राजनेता महिलाओं की प्रशंसा में कसीदे पढ़ने से नहीं थकते हैं, वे व्यावहारिक जीवन में दुराचार की पराकाष्ठा देखकर भी आंखों पर पट्टी बांध लेते हैं। वे इस शर्मनाक कांड की व्याख्या अपनी सुविधा के अनुसार कर रहे हैं। एक पूर्व प्रधानमंत्री के परिवार का सांसद अपने घर में काम करने वाली महिलाओं तक को न बख्शे, इससे ज्यादा शर्मनाक क्या हो सकता है। आरोप है कि प्रज्वल रेवन्ना ने किसी भी आयु और वर्ग की महिला को नहीं बख्शा। इतना ही नहीं, सरकारी महिला अधिकारियों, कर्मचारियों व पार्टी कार्यकताओं तक को हवस का शिकार बनाकर वीडियो बनाने तक के गंभीर आरोप प्रज्वल पर लगे। वीडियो इसलिये बनाये ताकि शोषण के बाद लोकलाज के भय से उन्हें चुप रखा जा सके। आरोपों के निशाने पर पूर्व मंत्री व प्रज्वल के पिता एचडी रेवन्ना भी हैं। हालांकि, प्रज्वल का आरोप है कि एआई के जरिये उसके फोटों से छेड़छाड़ करके वीडियो बनाए गए हैं। लेकिन यदि वह निर्दोष है तो फिर उसे चुपके से जर्मनी भागने की क्या जरूरत पड़ी? बिना सरकारों की मिलीभगत के क्या वह जर्मनी भाग सकता था? क्या यह जन विश्वास सही है कि घोर विरोधी राजनीतिक दल व्यावहारिक जीवन में एक दूसरे के बड़े नेताओं को बचाने के लिये कवच का काम करते हैं? सवाल स्वाभाविक है कि जनता दल (एस) ने अश्लील वीडियो मामले में प्रज्वल को पार्टी से निर्लंबित करने में इतनी देर क्यों की? निस्संदेह, ऐसे यौन कुंठित जनप्रतिनिधि का चुना जाना लोकतंत्र के दामन पर एक दाग सरीखा है। प्रज्वल के जैसे विकृतिपूर्ण वीडियो सार्वजनिक हुए हैं उसे देखते हुए तत्काल उच्चस्तरीय जांच और कार्रवाई की जरूरत है। बहरहाल, अब कर्नाटक सरकार द्वारा मामले में एसआईटी के गठन और प्रज्वल रेवन्ना के खिलाफ बलात्कार व अन्य गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज करने के बाद उम्मीद जगी है कि दोषी को दंडित करके पीड़िताओं को न्याय मिल सकेगा।

कमलेश पांडेय
वरिष्ठ पत्रकार व स्तम्भकार

कहना न होगा कि लोकतंत्र, मानवाधिकार, मीडिया की स्वतंत्रता और भूख जैसे मुद्दों पर भारत को जानबूझकर निशाना बनाया जाता है। क्योंकि कुछ सरकारों की आदत होती है कि वह दूसरों से जुड़े हर मुद्दे पर प्रतिक्रिया देते हैं। इसलिए भारत सरकार ने भी सार्वजनिक तौर पर अपनी नाराजगी से अवगत करा दिया है।

भारत के विरुद्ध अमेरिकी एजेंसियों समेत पश्चिमी देशों की फितरत पर दमदार पलटवार की है जरूरत, अन्यथा नहीं चेतेंगे

भारत सरकार ने अमेरिका की एक प्रतिष्ठित एजेंसी अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता पर अमेरिकी आयोग (यूएससीआईआरएफ) पर भारत में जारी आम चुनाव 2024 की प्रक्रिया में हस्तक्षेप करने का आरोप लगाया है। क्योंकि गत दिनों ही यूएससीआईआरएफ की तरफ से धार्मिक आजादी पर एक रिपोर्ट जारी की गई, जिसमें भारत में धार्मिक आजादी की स्थिति को चिंताजनक बताते हुए इसकी स्थिति लगातार खराब होने की बात कही गई है।

यही वजह है कि भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने यूएससीआईआरएफ को राजनीतिक एजेंडे वाला पक्षपाती संगठन करार दिया है। यही नहीं, उन्होंने सालाना स्तर पर जारी होने वाली इस रिपोर्ट को राजनीतिक प्रोपेगंडा कहा है। बकौल रणधीर जायसवाल, "यूएससीआईआरएफ को राजनीतिक एजेंडे वाले पक्षपाती संगठन के रूप में जाना जाता है। इसने वार्षिक रिपोर्ट के हिस्से के रूप में भारत के बारे में अपना दुष्प्रचार प्रकाशित करना जारी रखा है। हमें वास्तव में ऐसी उम्मीद भी नहीं है कि यह आयोग भारत की विविधतापूर्ण, बहुलतावादी और लोकतांत्रिक मूल भावना को समझने की कोशिश भी करेगा। उनके द्वारा दुनिया की सबसे बड़ी चुनावी प्रक्रिया में हस्तक्षेप करने के लिए किए गए प्रयास कभी सफल नहीं होंगे।"

यूँ तो अमेरिका की चुनाव प्रक्रिया के दौरान वहां के राजनीतिक दल और राजनेता कभी चीन तो कभी रूस पर हस्तक्षेप करने का आरोप लगाते रहे हैं, लेकिन अब भारत सरकार के विदेश मंत्रालय ने बजाप्ता प्रेस कांफ्रेंस करके अमेरिका की प्रतिष्ठित एजेंसी यूएससीआईआरएफ पर भारत में जारी चुनाव प्रक्रिया में हस्तक्षेप करने का जो आरोप लगाया है, उसके गहरे निहितार्थ हैं। क्योंकि यह पहला मौका है जब भारत ने किसी अमेरिकी एजेंसी पर लोकतांत्रिक तरीके से होने वाली चुनावी प्रक्रिया में अमेरिकी एजेंसी की तरफ से हस्तक्षेप करने का आरोप लगाया है। संभवतया यह अमेरिकी एजेंसियों को लेकर भारत के बदले रवैये को भी बतलाता है।

इस बात में कोई दो राय नहीं कि अमेरिका भारत का एक अहम रणनीतिक साझीदार देश है। हाल के वर्षों में भारत के द्विपक्षीय रिश्तों में जितनी गहराई अमेरिका के साथ आई है, वैसा किसी भी दूसरे देश के साथ देखने को नहीं मिला है। बावजूद इसके अमेरिका या कुछ दूसरे पश्चिमी देशों की एजेंसियों की तरफ से भारत में मानवाधिकार, धार्मिक आजादी, प्रेस की स्वतंत्रता जैसे मुद्दे के जरिये किये जाने वाले हस्तक्षेप भारतीय नेतृत्व बर्दाश्त नहीं कर सकता है। इसलिए ऐसे हस्तक्षेप को लेकर सख्ती से जवाब देने की रणनीति भारत अपना चुका है, जो बहुत बड़ी बात है।

कहना न होगा कि लोकतंत्र, मानवाधिकार, मीडिया की स्वतंत्रता और भूख जैसे मुद्दों पर भारत को जानबूझकर निशाना बनाया जाता है। क्योंकि कुछ सरकारों की आदत होती है कि वह दूसरों से जुड़े हर मुद्दे पर प्रतिक्रिया देते हैं। इसलिए भारत सरकार ने भी सार्वजनिक तौर पर अपनी नाराजगी से अवगत करा दिया है। हमें इस बात पर फक्र होना चाहिए कि आज का भारत एक गाल पर तमाचा मारने पर दूसरा गाल आगे नहीं बढ़ाता। क्योंकि अगर अमेरिका समेत अन्य पश्चिमी देश यदि भारत विरोधी प्रतिक्रिया दे सकते हैं, तो भारत भी अमेरिका समेत अन्य पश्चिमी देशों के खिलाफ प्रतिक्रिया दे सकता है। उन्हें यह याद रखना चाहिए कि विदेश के मामले में दखल देने की यह आदत कभी कभी उल्टी भी पड़ सकती है।

हैरत की बात तो यह है कि यूएससीआईआरएफ की रिपोर्ट में भारत में धार्मिक स्थिति को लेकर काफी विवादास्पद टिप्पणी की गई है। इसमें भारत को अफगानिस्तान, अजरबैजान, नाइजीरिया, वियतनाम जैसे देशों की श्रेणी में रखा गया है। वहीं, अमेरिकी विदेश मंत्रालय से आग्रह किया गया है कि भारत को भी धार्मिक आजादी को लेकर खास चिंता वाले देश (सीपीसी) की श्रेणी में रखा जाए। इस श्रेणी में रखे जाने वाले देशों को लेकर अमेरिकी प्रशासन का रवैया अलग होता है। साथ ही उन पर कई तरह के प्रतिबंध लगाने की व्यवस्था है।

याद दिला दें कि यूएससीआईआरएफ की रिपोर्ट आने से कुछ दिन पहले ही अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने भारत में मानवाधिकारों की स्थिति पर चिंता जताई थी। जिसपर पलटवार करते हुए भारतीय विदेश मंत्रालय ने दो टूक जवब दिया था कि अमेरिकी संस्थाएं भारत के बारे में अपनी खराब समझ का परिचय दे रही हैं। भारत के प्रति जितना दुराग्रह अमेरिकी विदेश मंत्रालय की रिपोर्ट में झलक रहा था, उतना ही यूएससीआईआरएफ की रिपोर्ट में भी। इससे स्पष्ट है कि पश्चिमी देशों यानी अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन आदि देशों का श्रेष्ठता बोध कभी खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा है। जबकि इन देशों की हकीकत अब दुनियावी देशों से छिपी हुई नहीं है। अमरीकी नस्लीय हिंसा और वहां के विश्वविद्यालयों में हो रहे पक्षपाती प्रदर्शनों के बारे में वह खुद ही समझ ले, तो उसके दूरगामी हित में होगा। सीधा सवाल है कि भारत के आंतरिक मामलों में अनावश्यक टिप्पणी करने वाले पश्चिमी देशों की संस्थाएं क्या दुनिया को यह बता पाएंगी कि अमेरिका में पुलिस विश्वविद्यालयों में धावा क्यों बोल रही है और ब्रिटेन अवैध प्रवासियों को पकड़-पकड़ कर रवांडा क्यों भेज रहा है? इसी तरह कनाडा में हड़ताली ट्रक ड्राइवरों से निपटने के लिए आपातकाल क्यों लगा दिया जाता है? इस बात को नहीं भुलाया जा सकता कि ये वही पश्चिमी संस्थाएं हैं जो कृषि कानून विरोधी उग्र आंदोलन और शाहीन बाग के अराजक धरने को एक तरह से न केवल अपना समर्थन दे रही थीं, बल्कि भारत को मानवाधिकारों और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का पाठ भी पढ़ा रही थीं।

मेरा मानना है कि अमेरिका, कनाडा समेत यूरोपीय देश तब तक बाज नहीं आने वाले जब तक भारत भी इन देशों के मामलों में अपनी प्रतिक्रिया देना नहीं शुरू करता। वैसे भी भारत को केवल प्रतिक्रिया ही नहीं देनी चाहिए, बल्कि बाकायदा रिपोर्ट जारी कर यह बताना चाहिए कि इन देशों में क्या कुछ गड़बड़ हो रही है, क्योंकि किसी भी देश में सब कुछ ठीक नहीं रह सकता है। जब भारत ऐसा करेगा, तभी पश्चिमी देश चेतेंगे, अन्यथा कतई नहीं।

पोलिंग बूथों पर इतना सन्नाटा क्यों है?

(आलेख : बादल सरोज)
(लेखक सम्पादक और अखिल भारतीय किसान सभा के संयुक्त सचिव हैं।)

-

अभी नौतपा शुरू नहीं हुआ है झ तब तक तो लू भी चलना शुरू नहीं हुई थी, मगर इसके बाद भी इतनी उच्च तीव्रता की घन गरज के साथ हुए लोकसभा चुनावों के मध्यप्रदेश में अब तक हुए पहले दोनों चरणों में मतदाताओं का रुख चौंकाने वाला रहा है। पहले चरण में 2019 की तुलना में 7.32 प्रतिशत कम मतदान हुआ। इससे घबराई सत्ता पार्टी ने अगले चरण में मतदान बढ़ाने के लिए कोशिशें तेज करने का आव्हान किया, तो वह और कम होकर 7.65 प्रतिशत रह गया। अगले चरणों में क्या होने वाला है, यह देखना अभी बाकी है।

अब तक हुयी 12 सीटों के चुनाव में सभी सीटों पर मतदान प्रतिशत में कमी आने से स्पष्ट है कि यह कोई स्थानीय कारण नहीं है। इसका चुनाव में खड़े हुए प्रत्याशियों से कोई ज्यादा लेना-देना नहीं है। यह एक साफ संकेत है : एक ऐसा संकेत, जिसमे नतीजों में उलट फेर करने की पर्याप्त क्षमता छुपी हुई है। सीटवार निगाह डालने पर ये संकेत ज्यादा साफ-साफ पढ़ा और समझा जा सकता है।

पहले चरण में जिन 6 सीटों पर वोट डाले गए, उनमें बालाघाट में 4.95 प्रतिशत, छिंदवाडा 3.21, जबलपुर 8.91, मंडला 5.27, शहडोल 11.05, सीधी में 15.14 प्रतिशत ; दूसरे चरण में दमोह में 9.49 प्रतिशत, टीकमगढ़े 7.34, सतना 9.38, रीवा 10.89, खजुराहो 3.29 तथा होशंगाबाद में 7.47 प्रतिशत कम मतदान हुआ। इस तरह 6 सीटों पर तो यह कमी लगभग दो अंकों या उससे भी अधिक की है, जिनमे विन्ध्य की चारों सीटों पर यह सबसे ज्यादा है।

यह कमी सिर्फ संख्याओं या आंकड़ों का खेल नहीं है, इसके कुछ निहितार्थ हैं और वे वास्तविक हैं ; इस बात का इशारा केंद्र और राज्य में सत्तारूढ़ सरकार के नेता अमित शाह के बयान से मिल जाता है। उन्होंने इस कम मतदान की स्थिति को सुधारने के लिए अपनी पार्टी के नेताओं को अजीबोगरीब धमकी दी है। अमित शाह ने अपने स्वभाव के अनुकूल एक के साथ एक फ्री टाइप की एक स्कीम भी घोषित` की है। उन्होंने कहा है कि ह्लजिन मंत्रियों के क्षेत्रों में कम मतदान हुआ है, उन्हें मंत्रिमंडल से हटाकर, जो विधायक अपने-अपने विधानसभा क्षेत्र में अधिक मतदान करवाएंगे, उन्हें मंत्री बना दिया जाएगा।ह्व अगर सच में यह स्कीम

लागू हुयी, तो अब तक हुए दोनों चरणों के मतदान को देखते हुए उपमुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ला और दिल्ली से मुख्यमंत्री बनने की आशा में आये, मगर मंत्री भर बनकर रह गए प्रहलाद पटेल की मंत्रिमंडल से छुट्टी पक्की है। उनके अलावा जिन मंत्रियों की लालबत्ती जायेगी, उनमे राकेश सिंह, राव उदय प्रताप सिंह, संपतिया उइके, दिलीप जायसवाल, प्रतिमा बागरी और राधा सिंह भी शामिल है। अगले चरणों में भी यही सिलसिला जारी रहा, तो लगता है मोहन यादव सहित सारे का सारा मंत्रीमंडल ही नया बनाना होगा। मगर खुद अमित शाह जानते हैं कि वे अपने कहे पर कितने टिके रहने वाले हैं। बहरहाल ऐसी धमकी देने के पीछे उनकी मंशा सही है झ वे कम मतदान के पीछे के लिखे को एकदम सही पढ़ रहे हैं।

इतने भारी शोर शराबे, हजारों करोड़ रुपया फूंककर चप्पे-चप्पे को मोदी और कमल की तस्वीरों से पाट देने, पहले अयोध्या काण्ड के बहाने और उसके बाद रामनवमी की आड़ लेकर हर खंभे पर भगवा लटका देने, छुटके से बड़के अखबार, गोदी मीडिया से गाँव-मोहल्लों की एंड्राइड फोन भर से चलने वाली ज्यादातर कथित न्यूज चैनल्स को विज्ञापनों और नकदी से लाद कर अपना बना लेने, खुद मोदी द्वारा उन्माद और नफरत भड़काने वाले भाषणों की नीचाईयों के रिकॉर्ड बनाने, अगले ही दिन उन्हें भी तोड़कर फिर एक नया रिकॉर्ड बनाने, लाभार्थियों की जन्मकुंडली रखे घूमते पन्ना-अन्नाओं के बावजूद मतदाता यदि वोट डालने नहीं निकल रहे हैं, तो अमित शाह को चिंतित होना ही चाहिए। यह सत्ता पार्टी का तिरस्कार भी है, धिक्कार भी है।

यह वह नोटा है, जिसने पोलिंग बूथ तक जाना भी ठीक नहीं समझा और अपनी गैरहाजिरी से घर बैठे ही नोटा का बटन दबा दिया। कुछ लोगों के अनुसार यह हाल में कुछ ज्यादा ही विवादित हुयी ईवीएम की वजह से भी हो सकता है कि कईयों ने यह मान ही लिया हो कि जब ईवीएम में सब कुछ फिक्स है, तो जाने का मतलब क्या। मगर ये कुछ ज्यादा ही दूर की कौड़ी है ; असल बात वही है, जो अमित शाह ने पकड़ी है और वह यह कि लीपा-पोती की सारी कोशिशो के बाद भी, सब कुछ के बावजूद भाजपा अपनी असफलताओं के हिमालयी ढेर को ढांप नही पायी है, कि उसके घोटालों और अपराधों ने उसके धुर समर्थकों को भी इस कदर निरुत्तरित और लज्जित कर दिया है कि उनमें से ज्यादातर न निकल रहे हैं, न निकाल रहे हैं '। जबलपुर, रीवा, सीधी, सतना और दमोह में वे युवा नदारद थे, जो पिछले चुनाव में 'हर हर घर घर मोदी' आलाप रहे थे। सभी जगह वह मध्यवर्ग, खासतौर से सवर्ण मध्यवर्ग, भी अरुचि और तटस्थता का शिकार था, जिसने पिछले कुछ वर्षों में अपनी अक्ल व्हाट्सएप के कूड़ेदान के हवाले की हुई है। सीधी, शहडोल, मंडला में आदिवासियों के बीच कम मतदान एक नया फिनोमिना है। कुल मिलाकर यह कि अमित शाह को सही-सही पता है कि कम मतदान का मतलब क्या है!!

कम मतदान सिर्फ मध्यप्रदेश में ही हुआ हो ऐसा नहीं है! इस बार के लोकसभा चुनाव घटते मतदान के चुनाव हैं झ पोलिंग बूथ न जाकर मतदाताओं ने जो कहा है, उसे सुनकर ही भाजपा और उसके एकमात्र प्रचारक नरेंद्र मोदी अपना सारा सरोदा भूल चुके हैं। अंड-बंड, आंय-बांय कुछ भी बोले जा रहे हैं।

वे भारत के ऐसे पहले प्रधानमंत्री बन गए हैं, जिन्हें अपने ही देश की जनता में नफरत और जहर और विभाजन फैलाने और झूठ बोलने के लिए अपने ही द्वारा बिठाए गए केन्द्रीय चुनाव आयोग के कारण बताओ नोटिस का सामना करना पड़ा है। यह घबराहट जनता की भावनाओं को समझने से पैदा हुयी है। मंदिर चला नहीं, सी ए ए के पीछे का मकसद सधा नहीं, इस बार कोई पुलवामा अब तक मिला नहीं है झ इसलिए काठ की हांड़ी तिबारा चढने की संभावना न देख कर हिन्दू-मुस्लिम पर उतर आये हैं।

यह शुभ संकेत है कि वे डर रहे हैं। लोकतंत्र की बेहतरी और सलामती के लिए जरूरी है कि इस डर को और बढाया जाए झ मतदाताओं को प्रेरित किया जाए कि उनका वोट डालने न जाना भर काफी नहीं है, उनका वोट डालकर इस सरकार को गद्दी से हटाना और भी कारगर होगा!!

06 MAY 2024 M4U:Layout 1 06-May-24 12:53 AM Page 3

संक्षिप्त समाचार

नाबालिग से दुराचार कर जान से मारने की धमकी देने के मामले में दो और आरोपी गिरफ्तार

अंबाला। महिला पुलिस थाना अम्बाला में दर्ज नाबालिगा से दुराचार कर जान से मारने की धमकी देने के मामले में 03 मई 2024 को पुलिस ने कार्यवाही करते हुए आरोपी प्रिन्स व हेमन्त कुमार को गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय के आदेशानुसार न्यायिक हिरासत में भेज दिया। इस मामले में सलिप्त चार आरोपियों को पहले ही गिरफ्तार किया जा चुका है।इस मामले के सम्बन्ध में शिकायतकर्ता नाबालिगा की दादी ने 12 मार्च 2024 को महिला पुलिस थाना अम्बाला में शिकायत दर्ज करवाई थी कि आरोपी अवतार सिहँ व अन्य ने उसकी एक पोती से दुराचार कर जान से मारने की धमकी देने व दूसरी पोती को अनैतिक कार्य में फंसाने का प्रयास करने का अपराधिक कार्य किया है। इस शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज कर कार्यवाही शुरू कर दी थी।

अवैध तमंचे सहित अभियुक्त गिरफ्तार

पुवायां /शाहजहांपुर। पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर अनन्तापुर चौराहे से एक अभियुक्त को गिरफ्तार किया है। जिसके पास से एक अवैध तमंचा व कारतूस बरामद हुई है। पुलिस ने बताया कि शनिवार मुखबिर द्वारा सूचना मिली की एक व्यक्ति अनन्तापुर चौराहा कस्बा पुवायां में खड़ा हैं। जिसके पास अवैध शस्त्र है यदि जल्दी की जाएं तो पकड़ा जा सकता है। पुवायां पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर अभियुक्त को मौके पर पकड़ लिया और पुछताछ करने पर उसने अपना नाम विपिन जाटव निवासी गांव जेवा थाना पुवायां बताया जामा तलाशी करने पर उसके पास एक तमंचा 315 बोर तथा एक अदद जिंदा कारतूस बरामद हुई है। पकड़े गए अभियुक्त के विरुद्ध अभियोग पंजीकृत कर विधिक कार्रवाई की जा रही है।

हाथी की सवारी छोड़ तनुज पुनिया की सारथी बनी पूर्व विधायक मीता गौतम

मीडिया फॉर यू
बाराबंकी: अशरफ अली

लोकसभा चुनाव 2024 के मतदान की तारीख जैसे जैसे करीब आ रही है नेताओ की अंतरात्मा जागृत होने से जनपद के राजनीतिक समीकरणों में भी तेजी से बदलाव हो रहा है। कांग्रेस और सपा खेमे के कई धुरंधरों के बाद अब बसपा से टिकट न मिलने पर बसपा की पूर्व विधायक मीता गौतम की भी अंतरात्मा जाग गयी है। अंतरात्मा जागृत होते ही उन्हें संविधान पर खतरा नजर आने लगा जिसे बचाने के लिए अपने दर्जनों समर्थकों के साथ उन्होंने शनिवार को कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण कर ली।

प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में राष्ट्रीय महासचिव अविनाश पाण्डेय के सामने कांग्रेस की सदस्यता लेने के बाद नगर के सिविल लाइन स्थित मोहसिना किदवई की कोठी में बने कांग्रेस प्रत्याशी तनुज पुनिया के केन्द्रीय चुनाव कार्यालय पहुंची सुश्री मीता गौतम ने पत्रकारवार्ता में कहा कि बाराबंकी लोकसभा सीट पर इन्डिया गठबन्धन के प्रत्याशी तनुज पुनिया और भाजपा में सीधी लडाई है। इस चुनाव में किसी और दल के लडने का कोई मतलब नही है। तनुज पुनिया का साथ देना समय और जनता की आवाज है। मै आपको विश्वास दिलाती हूं कि हम लोग मिलकर मेहनत करके तनुज पुनिया को जिताकर बाराबंकी की सीट जननायक राहुल गांधी की झोली मे डालेगे। बसपा छोड़ने का कारण पूछने पर पूर्व विधायक मीता गौतम ने कहा कि

आज बाबा साहब के संविधान और लोकतंत्र को खतरा है। भाजपा के लोग कह रहे हैं कि 400 सीट लाकर संविधान बदल देंगे। यह समय की पुकार है कि गठबन्धन बनाकर भाजपा को सत्ता से बाहर किया जाए। हमे पूरी उम्मीद थी कि बसपा सुप्रीमो संविधान बचाने की खातिर गठबंधन में शामिल होंगी। लेकिन जब उन्होंने अकेले चुनाव लड़ने का निर्णय ले लिया तो संविधान और लोकतंत्र की रक्षा के लिए हमे बसपा छोड़ कांग्रेस में शामिल होने का निर्णय लेना पड़ गया। हालांकि मीता गौतम की यह दलील लोगो के गले नही उतर रही। उनका कहना है कि यदि ऐसा होता तो मीता गौतम चार माह पहले ही बसपा छोड़ चुकी होती क्योंकि बसपा सुप्रीमो मायावती ने 15 जनवरी को अपने जन्मदिन के कार्यक्रम में ही अखिलेश यादव को गिरगिट बताते हुए यह स्पष्ट कर दिया था कि बसपा किसी गठबंधन का हिस्सा नही बनेगी। बल्कि चुनाव परिणाम आने के बाद की परिस्थितियों के अनुसार गठबंधन में शामिल होंगी। दूसरी तरफ यह भी चर्चा है कि मीता गौतम बसपा से लोकसभा का चुनाव लड़ने की प्रबल दावेदार थी। लेकिन पार्टी द्वारा उन्हें नजरअंदाज कर लखनऊ प्रभारी शिव कुमार दोहरे को प्रत्याशी बनाया जाना उन्हें नागवार गुजरा और शिवकुमार के टिकट पर मोहर लगते ही वो बसपा छोड़ कांग्रेस में शामिल हुई है।

मीता गौतम के पाला बदल कर कांग्रेस में आ जाने से पूर्व सांसद पीएल पुनिया काफी गदगद नजर आ रहे हैं। उन्हें लगता है कि बसपा के कैडर वोट बैंक पर मीता गौतम की मजबूत पकड़ है। जिसकी बदौलत ही वो 2007 के विधानसभा चुनाव में उन्हें शिकस्त देकर फतेहपुर विधानसभा सीट से विधानसभा पहुचने में भी कामयाब रही थी। हालांकि बाद में मीता इस इतिहास को दोहरा न सकी और 2012 के विधानसभा चुनाव में उन्हें फतेहपुर व 2017 के चुनाव में जैदपुर विधानसभा सीट पर हार का सामना भी करना पड़ा है। अब मीता कांग्रेस में है और तनुज पुनिया की सारथी बनकर उन्हें जिताने का दावा कर रही है। अपने दावों में वह कितना कामयाब होती है यह तो 6 जून को ही पता लगेगा।

खेल प्रतियोगिता विजेता महिलाओं को किया सम्मानित

अम्बाला। कैंट स्थित संकल्प योग केंद्र की निर्देशिका एकता डांग ने मातृ दिवस के उपलक्ष में सोसाइटी की महिलाओं के लिए निशुल्क खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया।जिसमें लगभग 40 महिलाओं ने जोश और उत्साह के साथ भाग लिया। खो खो, रेस, बास्केटबॉल और बहुत से मनोरंजक खेलो के साथ-साथ उनमें परस्पर मुकाबला भी करवाया ।निर्देशका का उद्देश्य उन महिलाओं को एक मंच दिलवाना था जो अपनी ग्रह गृहस्थी को भली भाँति निभाती है। चार दीवारी में बंद रहकर कहीं ना कहीं अपने अंदर की प्रतिभा को सामने लाने में संकोच भी करती हैं।ऐसी महिलाओं ने आज प्रात पार्क में गेम्स खेलने में खूब मस्ती करते हुए उपहार भी जीते। तथा अपने आप पर गर्व महसूस किया। निर्देशिका का कहना है कि ऐसे निशुल्क कार्यक्रम संकल्प योगा सेंटर की ओर से भविष्य में भी होते रहेंगे।

आंवला लोकसभा में सपा प्रत्याशी के दावे हवा हवाई

क्षत्रिय ब्राह्मण के लोग बोले 90% दोनों समाज धर्मेंद्र कश्यप के साथ

मीडिया फॉर यू

आंवला/बरेली। आंवला लोकसभा क्षेत्र में चुनावी माहौल गर्म है हर पार्टी का प्रत्याशी अपनी अपनी जीत का दावा करता नजर आ रहा है वहीं जानकारी के मुताबिक आंवला से सपा प्रत्याशी नीरज मौर्य व उनके समर्थक लगातार क्षत्रिय समाज और ब्राह्मण समाज अपने पक्ष में होने का दावा करते नजर आ रहे हैं आखिर सपा प्रत्याशी के दावे में कितनी दम है यही सच्चाई जानने के लिए हमारे संवाददाता द्वारा आंवला लोकसभा क्षेत्र के क्षत्रिय समाज और ब्राह्मण समाज बाहुल्य क्षेत्र में जाकर पड़ताल की गई तो सच सामने आता हुआ दिखाई दिया

जिसमें क्षत्रिय समाज व ब्राह्मण समाज के लोगों द्वारा पूरी तरह से सपा प्रत्याशी नीरज मौर्य को एक्पोज होते दिखाई दिए

सभी बातें हवा हवाई दिखाई दीं

ज्यादातर क्षत्रिय समाज व ब्राह्मण के लोगों द्वारा बताया गया कि सपा के प्रत्याशी द्वारा अफवाहें उड़ाई जा रही हैं वे सब भारतीय जनता पार्टी को वोट कर रहे हैं क्षत्रिय समाज व ब्राह्मण समाज लगभग 90% भाजपा को वोट कर रहा है ।

मैं धर्मेंद्र कश्यप जी को लड़ा रहा हूं बाकी पार्टी के नेता कभी क्षेत्र में आके तक नहीं देखते।

....पंडित सुधाकर पाराशरी

मैं क्षत्रिय समाज से हूं मैं आंवला से भाजपा प्रत्याशी धर्मेंद्र कश्यप को अपना मत दूंगा हमारे यहां लगभग 90% लोग बीजेपी को जा रहे हैं हमारे यहां जल्द ही में एक सभा हुई है जिसमें सभी ब्राह्मणों व ठाकुर समाज ने बीजेपी को समर्थन दिया है धर्मेंद्र कश्यप के विषय में गलत अफवाहें उड़ाई जा रही हैं सत्य तो यह है कि नीरज मौर्य ने विधायक रहते हुए जलालाबाद में लोगों पर जुल्म किये इसलिए वहां की जनता ने इन्हें नकार दिया।

...राजन सिंह चौहान ग्राम रसूला

आंवला लोकसभा से हम धर्मेंद्र कश्यप को सपोर्ट वोट कर रहे हैं दावा सब करते हैं 90% ब्राह्मण 90% ठाकुर मोदी जी के समर्थक हैं।

....सत्येंद्र उपाध्याय

हम आंवला से प्रत्याशी धर्मेंद्र कश्यप को सपोर्ट कर रहे हैं देश हित के लिए हम वोट कर रहे हैं आंवला लोकसभा का 90% ठाकुर बीजेपी को समर्थन में है बाकी अफवाह उड़ाई जा रही है ब्राह्मण भी यहां 90 % प्रतिशत बीजेपी को सपोर्ट में हैं।

....धर्मेंद्र सिंह चौहान ग्राम रसूला आंवला लोकसभा

मैं बीजेपी कमल के फूल को अपना मत देना पसंद करूंगा मैं ब्राह्मण समाज से हूं समाजवादी पार्टी जातिवाद के ऊपर चलती है हमेशा समाजवादी मुसलमानों की भी नहीं हुई वह केवल गुंडे बदमाश मबालियों की पार्टी है इसके कार्यकाल में हर चार किलोमीटर पर लूट खसोट चलती थी समाजवादी सरकार में हम डर के कारण आंवला से घर नहीं आते थे लेकिन जब से योगी शासन आया है तब से लूटपाट खत्म हो गई है नीरज मोर्य चंद लोगों के लिए ही होंगे इलेक्शन के बाद नजर नहीं आएंगे।

...हिरदेश उपाध्याय ग्राम रसूला

हमारे क्षेत्र में यहां क्षत्रिय समाज और ब्राह्मण समाज का गढ़ है 90% लोग बीजेपी का सपोर्ट कर रहे हैं इधर-उधर के लोग इधर-उधर की बातें कर रहे हैं वोटर को बहका रहे हैं क्षत्रिय समाज, ब्राह्मण समाज सब बीजेपी का वोट है अफवाहों पर कोई ध्यान ना दे मोदी जी योगी जी को बीजेपी कोई वोट दें।

...अतेन्द्र सिंह चौहान आंवला लोकसभा

मैं हाथी को वोट दूंगा मेरा पूरा गांव जाटव समाज का है किसी और को वोट देंगे कोई नहीं मानेगा मैं सपा प्रत्याशी नीरज मौर्य को नहीं जानता।

..अमरपाल गंगापुर गौंटिया

मैं क्षत्रिय समाज से हूं क्षत्रिय समाज बीजेपी कैंडिडेट से नाराज तो दिख रहे हैं परंतु जीत बीजेपी की ही होगी सरकार मोदी की ही बनेगी।

सुरेन्द्र पाल सिंह क्षत्रिय ग्राम उरला

मैं ठाकुर समाज से हूं मैं बीजेपी को वोट दूंगा सपा पार्टी ठाकुरों की अपोजिट पार्टी है उसको वोट नहीं देंगे।

....उपेश चौहान वीरपुरा

आंवला सपा प्रत्याशी नीरज मौर्य की खुलने लगी पोल, गंभीर आरोप, वीडियो हुआ वायरल

मीडिया फॉर यू

आंवला/बरेली। शोसल मीडिया पर एक वीडियो तेजी से वायरल हो रहा जिसके विषय में हमारे संवाददाता द्वारा पड़ताल की गई तो पता चला कि वायरल वीडियो में बोलने वाला व्यक्ति शाहजहांपुर के पूर्व जिला पंचायत सदस्य विजेन्द्र सिंह यादव हैं

वायरल वीडियो में विजेन्द्र सिंह यादव आंवला लोकसभा से गठबंधन प्रत्याशी नीरज मौर्य पर गंभीर पोल खोल आरोप लगाते हुए दिखाई दे रहे हैं वायरल वीडियो में विजेन्द्र सिंह यादव कह रहे हैं कि आंवला लोकसभा क्षेत्र को अभी तक ठीक से ये तक नहीं मालूम नीरज मौर्य कहा का रहने वाला है इसका चाल चलन क्या है आगे विजेन्द्र सिंह यादव कह रहे हैं कि हम लोग जलालाबाद में रहे हैं हम लोगों ने इसका अत्याचार जुल्म देखा है जो इसने ठाकुरों,मुस्लिमों, यादवों, ब्राह्मणों पर आर्थिक, सामाजिक, मानसिक शोषण किया वहां की जनता को इसने इतना परेशान किया कि गरीब जनता को मिलने वाला राशन गेंहू,चावल,चीनी कहीं नहीं बटने दिया क्षेत्र के जितने कोटेदार थे सभी कोटा कार्ड अपने यहां जमा करा लिए राशन का सारा गोदाम बेच देता था और उसी राशन को बेच बेचकर इसने कोठी बनवाई

जलालाबाद में इसने लोगों पर फर्जी मुकदमे लिखवाऐ जुल्म ढाये उनकी जिंदगी खराब कर दी

आगे वायरल वीडियो में विजेन्द्र सिंह यादव ने कहा ये चार बार वहां से इलेक्शन लड़ा जिसमें इसको वहां की जनता ने दो बार विश्वास करके जिताया जिन लोगों के इसने पैर छुए जीतने के बाद उनसे वही काम उल्टा करबाया ये बहुत बड़ा शैतान है इसी वजह से वहां की जनता ने इसे नकार दिया और अब इसको आंवला से टिकट दे दिया है यहां के लोगों को इसके विषय में कुछ नहीं मालूम है और आगे वायरल वीडियो में बसपा प्रत्याशी के फर्जी नामांकन मामले पर भी विजेन्द्र सिंह यादव ने कहा कि सत्यवीर नाम का व्यक्ति इसकी कोठी पर रहता है फर्जी तरीके से उससे इसने नामांकन करवाया था इसके रोम रोम में 420,हेराफेरी,फ्राडगीरी भरी हुई है इसने कई जगह फ्राडगीरी की एक फ्राड मामला ये इलेक्शन से पहले ही सामने आ गया यहां की जनता को ये समझना चाहिए

वायरल वीडियो के अंत वह आंवला की जनता से एक अपील करते हुए दिखाई दे रहे हैं जिसमें वह कह रहे हैं कि आने वाली 7 मई को इसके अलावा किसी को भी आंवला की जनता वोट कर दे नहीं तो जलालाबाद की त्रस्त जनता की तरह यहां के लोगों को भी पछताना पड़ेगा । वायरल वीडियो में विजेन्द्र सिंह यादव नाम के व्यक्ति द्वारा लगाए जा रहे गंभीर आरोपों के विषय में गठबंधन प्रत्याशी नीरज मौर्य से उनका पक्ष जानने की कोशिश की गई उनसे संपर्क नहीं हो पाया। खबर लिखे जाने तक आंवला सपा प्रत्याशी नीरज मौर्य की ओर से इस मामले पर कोई प्रतिक्रिया सामने नहीं आई।

समाजवादी लोहिया वाहिनी सिरौली गौसपुर ब्लाक कार्यकारिणी की हुई बैठक

मीडिया फॉर यू
बाराबंकी: अशरफ अली

सिरौलीगौसपुर आज 5 मई को सैदखानपुर रेलवे स्टेशन अखिलेश वर्मा पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ प्रदेश सचिव के कार्यालय पर समाजवादी लोहिया वाहिनी सिरौली गौसपुर ब्लाक कार्यकारिणी एक बैठक की गई बैठक की अध्यक्षता नवनियुक्त ब्लॉक अध्यक्ष अजय वर्मा व संचालन मदन वर्मा ने किया बैठक में मुख्य अतिथि पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ के प्रदेश सचिव अखिलेश वर्मा वशिष्ठ अतिथि अंकित वर्मा ने पहुंचकर गठबंधन के प्रत्यशी श्री तनुज पुनिया को जिताने के लिए कार्यकताओं को प्रोतसाहित किया और चुनाव में तन मन से गठबंधन के प्रत्याशियों को जिताने की अपील भी की और श्री राकेश वर्मा जी के हाथों को मजबूत करने का भी संदेश दिया व कार्यकारिणी का विस्तार किया जिसमें से एग्रीकल्चर डॉक्टर विपिन कुमार वर्मा जिला सचिव को विधानसभा प्रभारी रामनगर,जिला सचिव रमेश वर्मा को विधानसभा प्रभारी दरियाबाद प्रदीप यादव विधानसभा

रामनगर सचिव, राजेंद्र वर्मा ब्लॉक अध्यक्ष, विवेक कुमार ब्लाक महासचिव, सूरज ब्लॉक उपाध्यक्ष, सुभाष चंद्र ब्लॉक उपाध्यक्ष, अमरेश कुमार ब्लॉक उपाध्यक्ष, अमित यादव ब्लॉक उपाध्यक्ष, मुलायम यादव ब्लॉक कोषाध्यक्ष, बृज किशोर ब्लॉक मीडिया प्रभारी, आदित्य यादव ब्लॉक सचिव ,अविनाश मिश्रा ब्लॉक सचिव, सूर्य प्रकाश वर्मा ब्लॉक सचिव, अनुरुध वर्मा ब्लॉक सचिव, प्रमुख वर्मा ब्लॉक सचिव, अभिषेक वर्मा ब्लॉक सचिव, रजनीश यादव ब्लॉक सचिव, मोहम्मद जाहिद ब्लाक कार्यकारिणी सदस्य, दीपक कुमार ब्लाक कार्यकारिणी सदस्य, लवकुश ब्लाक कार्यकारिणी सदस्य, सरोज कुमार ब्लॉक कार्यकारिणी सदस्य, धर्मेंद्र ठाकुर ब्लाक कार्यकारिणी सदस्य, राजबहादुर ब्लॉक अध्यक्ष दरियाबाद, मनोज यादव मीडिया प्रभारी दरियाबाद ,राममिलन विधानसभा उपाध्यक्ष दरियाबाद, विवेक गौतम विधानसभा सचिव दरियाबाद ,बलवंत वर्मा विधानसभा उपाध्यक्ष दरियाबाद, मनोज कुमार विधानसभा सचिव,दरियाबाद सुखदेव गौतम विधानसभा उपाध्यक्ष दरियाबाद,रमेश रावत विधानसभा कोषाध्यक्ष दरियाबाद, राम सजीवन निषाद विधानसभा सदस्य दरियाबाद को नियुक्त किया गया इस अवसर पर विधानसभा जैदपुर के विधानसभा अध्यक्ष अशोक वर्मा अभय वर्मा, अमरदीप यादव, प्रदीप यादव शिवा के साथ में अन्य साथी गण मौजूद रहे

06 MAY 2024 M4U:Layout 1 06-May-24 12:53 AM Page 4

संक्षिप्त समाचार

प्रधानमन्त्री कार्यालय के आदेश का भी कर रहे है उलंघन जीएम विद्युत शाहा

मीडिया फॉर यू ब्यूरो

धनबाद। अखिल भारतीय पिछड़ा वर्ग संघ के जिला अध्यक्ष रत्नेश कुमार ने धनबाद सीएमडी को पत्र लिखकर कहा है दिनांक 04 अप्रैल को बीसीसीएल के कुसुंडा एरिया 6 के विश्वकर्मा प्रोजेक्ट में कार्यरत कर्मी बजरंगी कुमार कुमार के खिलाफ लिखित शिकायत किया था जिसके बाद माननीय प्रधानमंत्री कार्यालय से श्री विद्युत शाहा निजी विभाग कोयला भवन कोयला नगर बीसीसीएल धनबाद को पत्र भेजा गया था लेकिन प्रधानमंत्री कार्यालय का आदेश का भी उलंघन किया गया है ना तो कोई जांच किया गया नहीं बजरंगी कुमार पर अभी तक कोई कार्यवाई किया गया और कार्यवाई नही होने के कारण बीसीसीएल के कुछ भ्रष्ट अधिकारी कोयला माफियाओं को ऐसे ही संरक्षण देते रहेगे और बीसीसीएल को ऐसे ही चुना लगाते रहेंगे और बजरंगी कुमार पर जल्द कार्यवाई नही किया गया तो यह पूर्व की तरह बीसीसीएल अधिकारी को गुमराह करके बड़े बड़े कोयला माफियाओं का साथ देकर फिर से कोयला तस्करी करवाना शुरू कर सकते है और बीसीसीएल को चुना लगाते रहेंगे । की ऐसे भ्रष्ट कर्मी बजरंगी कुमार को अविलम निलंबित करने का कृपा करेगे जिससे भ्रष्टाचार पर रोक तक हो सके ।

नशा घर में क्लेश और अशांति के साथ साथ बच्चों और महिलाओं में असुरक्षा की भावना को देता है जन्म - डॉ. वर्मा

अम्बाला। कुरुक्षेत्र हरियाणा राज्य नारकोटिक्स कण्ट्रोल ब्यूरो के जागरूकता कार्यक्रम एवं पुनर्वास प्रभारी/ उप निरीक्षक डॉ. अशोक कुमार वर्मा आज तड़के अपने सरकारी आवास से साइकिल लेकर नशा मुक्ति के सन्देश के साथ निकले। वे पुलिस लाइन से कुरुक्षेत्र की और विभिन्न मार्गों से निकले। उनके साथ नशा मुक्ति अभियान के लिए गठित प्रयास फाउंडेशन के सदस्य कर्म चंद रहे। बीच मार्ग में स्थान स्थान पर लोगों ने उनको साइकिल पर देखा तो अभिवादन किया और रोककर उनके साथ फोटो ली। हरियाणा राज्य नारकोटिक्स कण्ट्रोल ब्यूरो के जागरूकता कार्यक्रम एवं पुनर्वास प्रभारी ने विभिन्न स्थानों पर लोगों को एकत्रित कर नशे के विरुद्ध जागरूक किया। रेलवे सड़क के एक स्थान पर ऑटो चालकों को एकत्रित कर उनके साथ विचार साँझा करते हुए ब्यूरो के अधिकारी डॉ. वर्मा ने बताया कि हरियाणा राज्य नारकोटिक्स कण्ट्रोल ब्यूरो का गठन इस आशय से किया गया है कि हरियाणा को ड्रग फ्री किया जा सके। उन्होंने बताया कि ब्यूरो के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक श्री ओपी सिंह साहब के दिशानिदेर्शों एवं पुलिस अधीक्षक श्रीमती पंखुरी कुमार के मार्गदर्शन में लोगों को नशे से दूर रहने को जागरूक किया जा रहा है। डॉ. वर्मा ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति दिन भर काम करके घर लौटता है तो घर में शांति चाहता है लेकिन कुछ लोग नशे का सेवन करके घर जाते हैं और घर में युद्ध का वातावरण बन जाता है। एक तो दिन भर की थकान और ऊपर से नशा करके घर जाकर क्लेश का होना न केवल स्वयं के लिए घातक है अपितु परिवार में अशांति होती है अपितु महिलाओं और बच्चों में असुरक्षा की भावना का जन्म होता है। उन्होंने कहा नशा करना जितना सरल है उसे छोड़ना भी कठिन नहीं है अपितु मनुष्य को दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ इस पर विजय प्राप्त करनी चाहिए। उन्होंने शपथ ग्रहण करवाई कि जीवन में किसी प्रकार का नशा नहीं करेंगे और अन्य लोगों को भी जागरूक करेंगे। यदि कोई व्यक्ति ड्रग्स बेच रहा है तो इसकी गुप्त सुचना 9050891508 पर देंगे। प्रयास सदस्य कर्म चंद और डॉ. अशोक कुमार वर्मा ने आज लगभग 30 किलोमीटर साइकिल चलाकर नशा मुक्ति का सन्देश दिया।

भगवान परशुराम सेवा समिति द्वारा अम्बाला कैन्ट में करवाया हवन यज्ञ

अम्बाला। भगवान परशुराम सेवा समिति रजि. 1069 अम्बाला कैन्ट का मासिक हवन यज्ञ मई महीने के पहले रविवार 5 मई 2024 को भगवान परशुराम मंदिर नग्गल करधान अम्बाला कैन्ट में हुआ।आज पंडित संतोष भट्ट द्वारा विधि विधान से हवन यज्ञ करवाया आज हवन में मुख्य यजमान तरशेम शर्मा और उनकी धर्मपत्नी प्रीति शर्मा थे।समिति के प्रधान अतुल शर्मा ने बताया कि समिति भगवान परशुराम जन्मोत्सव पर 10 मई को भगवान परशुराम मंदिर नग्गल करधान में सुबह 10 बजे हवन यज्ञ ओर 1 बजे भंडारा करेगी।समिति के सदस्य रवींद्र बिल्ला शर्मा ने बताया कि भगवान परशुराम मंदिर में हर रोज सुबह और शाम को आरती होती है शाम को समिति के सदस्य द्वारा प्रसाद का वितरण किया जाता हैं।इस हवन यज्ञ में राजेश गोल्डी शर्मा, डॉ राकेश भारद्वाज, राजीव शर्मा, नीतीश शर्मा, गोपाल शर्मा, शशिकांत पराशर,रिम्पी शर्मा और अन्य सदस्य मौजूद रहे।

बरदही बाजार के मेन चौराहे से गुजरने वाली 11000 विद्युत लाइन जो वोडाफोन टावर को गई है, उसके लटके खतरनाक एंगल से बहुत बड़ी दुर्घटना होने का अंदेशा

मीडिया फॉर यू ब्यूरो, मसीउद्दीन खान मस्सू, उतरौला बलरामपुर

बरदही बाजार के मेन चौराहे पर लगा लोहे का विद्युत पोल जिस पर 11000 की सप्लाई दौड़ती है। नीचे से एकदम सड़ कर किसी बड़ी दुर्घटना को दावत दे रहा है। और इस विद्युत पोल पर जो 11000 की लाइन गई है। वह एकदम चौराहे के ऊपर से गुजरती है, इस लाइन के नीचे लोहे का जो जाल लगता है। वह भी नहीं लगा हुआ है। और इसी रोड पर आगे पिपरा घाट वाली रोड पर डॉक्टर हाशमी क्लीनिक के बगल से 11000 की जो लाइन वोडाफोन टावर को गई है। उसका भी एंगल ऊपर से खुलकर लटका मौत को दावत दे रहा है। इस बारे में मीडिया फॉर यू संवाददाता से डॉक्टर शाइस्ता जबीं जी ने बताया कि इस 11000 विद्युत लाइन के इस लटके एंगल के बारे में कई बार जेई से कह चुकी हूं। लेकिन आज तक इसका निस्तारण नहीं किया गया। किसी दिन बहुत बड़ी दुर्घटना हो सकती है। और इस 11000 की लाइन के नीचे जाल लगाना बहुत जरूरी है। ताकि किसी बड़ी अनहोनी होने से रोका जा सके।

बंदर सफारी प्रतिनिधि मंडल ने बंदर पकड़ने और बंदर सफारी की मांग लेकर पुनः नगर आयुक्त को दिया ज्ञापन

मीडिया फॉर यू ब्यूरो
मथुराः जितेंद्र शर्मा

लोकसभा चुनाव पश्चात एक बार पुनः जनता पुकारी बंदर सफारी का प्रतिनिधि मंडल आज मथुरा वृंदावन नगर आयुक्त शशांक चौधरी से मिला तथा उन्हें बंदर सफारी बनाने के लिए अवगत कराया तथा पिछले काफी समय से जो बंदर पकड़ने का अभियान चल रहा था वह भी वर्तमान में ठप है उसको एक बार पुनः सुचारू रूप से करने के लिए भी निवेदन किया जिससे जनता जनार्दन को कुछ राहत मिले जिसपर आयुक्त ने कहा की एक दो दिन में बंदर पकड़ने का कार्य चालू कर दिया जाएगा। पंडित संजय हरियाणा ने बताया वर्तमान में बंदरों का काफी आतंक है बंदर इतनी खूंखार हो चुके हैं कि अभी हाल ही में वृंदावन के भागवत वक्ता द्वारा सोशल मीडिया के पोस्ट के माध्यम से बताया गया है वृंदावन में 40 से 50 महिला प्रतिदिन बंदरों का शिकार हो रही है तथा यही हाल मथुरा शहरी क्षेत्र का है गर्मी होने के कारण बंदर ने अपना स्थान गलियों और सड़कों को बना लिया है जिससे कि बच्चों को स्कूल से आने के बाद घर तक पहुंचाना मुश्किल हो गया है बंदरों द्वारा प्रतिदिन कोई ना कोई गंभीर दुर्घटना की जा रही हैं पूर्व में हम उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक से भी मिले उन्होंने भी बंदर सफारी का आश्वासन दिया किंतु धरातल पर कोई कार्य नहीं हो पा रहा है पं.यज्ञदत्त चतुर्वेदी ने बताया जनता पुकारी बंदर सुपारी मंडल द्वारा विगत कई वर्षों से बंदरों के आतंकी मुक्ति के लिए अभियान चलाया जा रहा है जिस क्रम में मंडल सभी जनप्रतिनिधियों जिला अधिकारी महोदय एवं महापौर नगर आयुक्त सभी से मिलकर अपनी बात कह चुका है की शहर में बंदरों का भारी आतंक है इनको समस्या के लिए स्थाई समाधान निकाला जाए लेकिन सभी राजनीतिक जनप्रतिनिधि अपनी रोटियां सीखने में लगे हुए हैं सब एक दूसरे के ऊपर डाल रहे हैं कितने वर्षों के बाद भी अभी समस्या का कोई हल नहीं निकला है जिला पंचायत अध्यक्ष किशन चौधरी से मिले तब उन्होंने कहा कि यदि नगर विकास मंत्रालय इस पर कम करें तो जगह उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी हमारी है किंतु आज नगर आयुक्त से बात होने के बाद उन्होंने कहा की यह बंदरों की समस्या की पॉलिसी प्रदेश सरकार द्वारा ही बनेगी तब ही कोई कार्य होगा। सार्थक चर्चा का अंतिम निर्णय यह निकला कि यहां के प्रतिनिधि यदि चाहे तो हर समस्या का समाधान हो सकता है किंतु उनके द्वारा अभी तक बंदर की समस्या पर कोई भी पत्र शासन को नहीं भेजा गया है।

जिला कारागार में योगासन प्राणायाम ध्यान योग हठयोग ज्ञान योग कराया गया

मीडिया फॉर यू
बिजनौरः अतीक अहमद

चांदपुर बिजनौर में योगी अनंत योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा सेवा ट्रस्ट साकेत कॉलोनी सिविल लाइन सेकंड बिजनौर अध्यक्ष योगेश कुमार के निर्देशन में जिला कारागार में डॉक्टर नरेंद्र सिंह राम सिंह पाल सोमदत्त शर्मा दो गजेंद्र कुमार शर्मा द्वारा जिला कारागार में योग कराया गया डॉक्टर नरेंद्र सिंह ने योगासन ग्रीवा संचालन स्कंद संचालन स्कंद खिंचाव ताड़ासन वृक्ष आसान अर्ध कटी चक्रासन पश्चिमोत्तानासन घुटना संचालन गोमुखासन अर्ध मत्स्येंद्रासन नोकासान भुजंगासन सलभासन उत्तानपादासन हलासन सर्वांगासन मयूरासन हास्यासन तथा भक्ति योग गीत द्वारा ध्यान परिवर्तन के माध्यम से परमपिता परमात्मा को पाने के उपाय बताएं तथा कहा गलती इंसान से होती है यहां से जाने के बाद गलती की पुनरावृत्ति ना हो इसके लिए परिवार के लिए समाज के लिए राष्ट्र के लिए अच्छे कार्य करने हैं इस अवसर पर राम सिंह पाल ने कैदियों को अनुलोम विलोम भ्रामरी प्राणायाम उज्जाई प्राणायाम कपालभाति चंद्रभेदी प्राणायाम शीतली प्राणायाम तथा ध्यानकराया सोमदत्त शर्मा ने सूक्ष्म व्यायाम हाथों पैरों की एक्सरसाइज कमर के लिए एक्सरसाइज उछल कूद आसान हास्य आसान कराया डॉक्टर गजेंद्र कुमार शर्मा सेवानिवृत्ति जिला अस्पताल बिजनौर ने कहा कि योग एवंआहार परिवर्तन के द्वारा हम अपने आप को स्वस्थ रख सकते हैं दवाई खाने की आवश्यकता ही ना पड़े इसके लिए हमें प्राकृतिक नियमों को अपनाना होगा तथा प्रकृति की शरण में जाना होगा तभी हम हमारा समाज हमारा परिवार हमारा राष्ट्र स्वस्थ रह सकता है इस अवसर पर जिला कारागार के जिला जेलर रविन्द्र नाथ का तालियो से स्वागत किया गया जिला जेलर रविन्द्र नाथ जी ने सभी आए हुए योगाचार्य का योग कराने के लिए हार्दिक धन्यवाद दिया तथा जलपान कराया अवसर पर जिला कारागार के कर्मचारी एवं कैदियों ने योग किया

नशीले पाउडर के साथ एक अभियुक्त को गिरफ्तार किया

मीडिया फॉर यू ब्यूरो, मथुराः जितेंद्र शर्मा

पुलिस अधीक्षक जनपद मथुरा द्वारा अपराध की रोकथाम एवं अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में पुलिस अधीक्षक नगर मथुरा व पुलिस अधीक्षक अपराध मथुरा के निर्देशन व क्षेत्राधिकारी रिफाइनरी के कुशल पर्यवेक्षण व प्रभारी निरीक्षक थाना हाईवे के कुशल नेतृत्व में चौकी प्रभारी तारसी द्वारा मय पुलिस बल के आज दिनांक 05 मई को गश्त व चैकिंग के दौरान ओडी काम्प्लेक्स के गेट से करीब 200 मीटर आगे ग्राम अडूकी की तरफ से 260 ग्राम नशीले पाउडर अल्प्राजोलम के साथ गिरफ्तार किया गया। माल बरामदगी के आधार पर थाना हाईवे पर सुसंगत धाराओ में अभियोग पंजीकृत कर विधिक कार्यवाही की गयी।

राशन डीलर कर रहे मनमानी, लोगों के अंगूठा लगाने के बाद भी नहीं किया राशन वितरण

मीडिया फॉर यू ब्यूरो
मथुराः जितेंद्र शर्मा

गरीबों को राशन मुहैया कराने के लिए सरकार बड़े-बड़े दावे कर रही है, लेकिन डीलरों की मनमानी गरीबों पर भारी पड़ रही है। सस्ते अनाज की आस में किल्लत सहने को गरीब मजबूर हैं। वहीं राशन डीलरों के द्वारा पहले अंगूठा लगवा लेना और फिर राशन देने के टाइम पर कार्ड धारकों के लगातार चक्कर लगवाना कार्ड धारकों भारी पड़ रहा है। आपूर्ति विभाग भी गरीबों के दर्द को दरकिनार कर दम तोड़ती व्यवस्था को बढ़ावा दे रहा है। ऐसा ही मामला नंदगांव ब्लॉक के गांव बरहाना राशन डीलर विधा देवी (रवि राशन डीलर) के यहां देखने को मिला। जहां पर राशन डीलर ने पूरे गांव के लोगों के अंगूठे लगवाने के बाद भी राशन नहीं बांटा गया। ग्रामीण लोगों का कहना है कि राशन डीलर हर बार राशन वितरण करते समय एक से दो किलो प्रति यूनिट कम देकर राशन वितरण करता है और नई मशीन आने के बाद भी इलेक्ट्रॉनिक कांटे से नापतोल कर अलग तरह के बांटों से राशन को तोला जाता है। कंप्यूटर से पर्ची निकलने के बाद भी कार्ड धारकों को पर्ची नहीं दी जाती है। कार्ड धारक जब काम देने की शिकायत राशन डीलर से करते हैं तो अभद्र भाषा का जमकर प्रयोग करते हैं । लोगों का कहना है कि राशन डीलर की अनेकों बार संबंधित अधिकारियों से शिकायत कर चुके हैं लेकिन फिर भी समस्या का कोई भी समाधान नहीं किया गया है लोगों का कहना है कि राशन डीलर ने 15 दिन पहले अंगूठा लगवाने के बाद भी आज तक राशन नहीं बांटा गया है, जिसको देखते लगता है कि कहीं ना कहीं संबंधित अधिकारियों की भी मिली भगत राशन डीलर से हो चुकी है जिसके कारण इस तरह की समस्याएं कार्ड धारकों के सामने आ रही है। अब देखना यह होगा कि योगी सरकार में क्या कार्ड धारक इसी तरह राशन डीलरों की मनमानी के चलते हुए परेशान रहेंगे या समस्या का कोई हल निकाला जाएगा।

मोदी जी का संकल्प है 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनानाः राहुल प्रधान

मीडिया फॉर यू ब्यूरो
मथुराः जितेंद्र शर्मा

पूर्व भाजपा किसान मोर्चा फायर ब्रांड नेता राहुल प्रधान ने कहा कि "सपा, बसपा, कांग्रेस के शासनकाल में भ्रष्टाचार का बोल-बाला था उन्होंने सम्प्रदाय विशेष के लिए तुष्टिकरण की सारी सीमाएं तोड़ दी थी। गरीबों के लिए बनाई योजनाओं का धन भी लूट कर अपना घर भरने में लगे रहते थे । लेकिन 2014 में मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने के बाद उन्होंने भ्रष्टाचारियों को जेल भेजने का काम किया मोदी जी गरीबी की पीड़ा को जानते हैं- श्री प्रधान ने कहा कि "सबका साथ-सबका विकास के मूल मंत्र को साकार करते हुए हर गरीब को उनके लिए बनाई गई योजनाओं का लाभ दिया । मोदी खुद गरीब का बेटे है इसलिए वो गरीबी की पीड़ा और संघर्ष को समझते है इसलिए अपनी जनहितकारी योजनाओं के माध्यम से गरीबों, किसानो, शोषितों और वंचितों को लाभान्वित करने का काम किया जितना विकास पिछले 65 वर्षों में नहीं हुआ उससे चौगुना काम मोदी जी ने पिछले 10 वर्षों में किया है, माताओं बहनों के वोट और आशीर्वाद की ताकत से नारी वन्दन अधिनियम लागू कर मातृशक्तियों को सशक्त बनाने का काम किया । यूक्रेन में फंसे भारतीय छात्रों को युद्ध रुकवा कर सकुशल भारत लाने का काम किया । इस लोकसभा चुनाव में भजापा को अभूतपूर्व विजय दिलाकर देश में पुनः सशक्त राष्ट्रवादी सरकार बनाए ।

डीएम ने अधिकारियों को सड़क सुरक्षा की शपथ दिलाई

मीडिया फॉर यू
बिजनौरः अतीक अहमद

चांदपुर बिजनौर के जिलाधिकारी अंकित कुमार अग्रवाल द्वारा कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक के दौरान उपस्थित सभी अधिकारियों को सड़क सुरक्षा की शपथ दिलाई गई उन्होंने शपथ दिलाते हुए कहा कि मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं सड़क पर सदैव यातायात नियमों का पालन करूंगा तथा सुरक्षित यात्रा के लिए सदैव दो पहिया वाहन चलाते समय स्वयं व पीछे बैठे व्यक्ति को इक्र मानक वाले हेलमेट अवश्य पहनूंगा व पहनाऊंगा चार पहिया वाहन चलाते समय हमेशा सीट बेल्ट लगाऊंगा लेन ड्राइविंग के नियमों का पालन करूंगा तेज रफ्तार से वाहन नहीं चलाऊंगा गलत दिशा में वाहन नहीं चलाऊंगा वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का उपयोग नहीं करूंगा शराब पीकर या नशे की हालत में वाहन नहीं चलाऊंगा सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्तियों की मदद के लिए सदैव तत्पर रहूंगा घर पर बच्चे इंतजार कर रहे है अतः मैं सदैव सुरक्षित व सावधानी से वाहन चलाऊँगा इस अवसर पर अपर पुलिस अधीक्षक शहरी संजीव वाजपेई जिला विद्यालय निरीक्षक रामाज्ञा कुमार बेसिक शिक्षा अधिकारी जयकरण यादव सहायक संभागीय परिवहन अधिकारी सहित सभी संबंधित अधिकारी मौजूद रहे

धनौरा रोड पर साइकिल व मोटरसाइकिल में हुआ भयानक एक्सीडेंट

मीडिया फॉर यू
बिजनौरः अतीक अहमद

चांदपुर सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार धनौरा मार्ग पर लगभग रात्रि 12 बजे के करीब दो व्यक्ति दिल्ली से अपने घर नहटौर जा रहें थे कि रास्ते में ग्राम अलावल पुर के सामने मोटरसाइकिल व साइकिल में हुआ भयानक एक्सीडेंट जिसमें एक व्यक्ति सून्दरा के रहने वाले अमरसिंह अलावलपुर के क्रेशर में चौकीदार था वह अपनें घर सूदरा से साइकिल से आ रहा था कि रास्ते में अंधेरा होने कि वजह से दिल्ली से आ रहे रहमान पुत्र नफीस शादाब पुत्र शाहिद कि मोटरसाइकिल व साइकिल में एक्सीडेंट होने पर तीनों व्यक्ति बुरी तरह से घायल हो गए जब एक्सीडेंट का पता बांगड़पुर निवासी समाजसेवी गुड सेमी शिवसेना जिला प्रमुख चौधरी वीर सिह व उनके साथियों राजीव कुमार बंटी व अवनीश शर्मा की मदत से इन तीनों को उठाकर बांगड़पुर में डॉक्टर पुलकित के यहां उपचार कराकर उसके बाद चांदपुर में डाक्टर मोहित चौधरी के यहां ले गए वहां पर उनके परिजनों द्वारा गम्भीर हालत को देखते हुए उन्हें बाहर ले गए

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, नीरज कुमार गुप्ता ने मैं0 मोनेक्स ऑफसेट एस डी कांप्लैक्स निकट एमएमजी अस्पताल जी टी रोड, गाजियाबाद से मुद्रित कराकर बी 10/6 उमेश पार्क, मोदीनगर, जिला गाजियाबाद से प्रकाशित किया। सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र गाजियाबाद न्यायालय होगा। मोबाइल नं. 9870629696 संपादक नीरज कुमार गुप्ता